"जिस नाम रिदै"

• रे मूढ़े तू किउ सिमरत अब नाही । नरक घोर महि उरध तप करता निमख निमख गुण गाँही ।1। रहाउ ।

अर्थः- हे मूर्ख ! अब जनम ले के तू क्यों परमात्मा को नहीं सिमरता । जब तू भयानक नर्क जैसे माँ के पेट में था तब तू उल्टा लटका हुआ तप करता था । वहाँ तू हर वक्त परमात्मा के गुण गाता था ।

अनिक जनम भ्रमतो ही आइओ मानस जनम दुलभाही ।
गरभ जोनि छोडि जउ निकसिओ तउ लागो अन ठांही ।1।

अर्थः- हे मूर्ख ! तू अनेकों ही जन्मों में भटकता आया है । अब तुझे दुर्लभ मनुष्य जन्म मिला है । पर माँ का पेट छोड़ के जब तू जगत में आ गया तब तू सिमरन को छोड़ के और - और जगहों में व्यस्त हो गया ।

करहि बुराई ठगाई दिन रैन निहफल करम कमाही । कण नाही तुह गाहण लागे धाइ धाइ दुख पाही ।2।

अर्थः- हे मूर्ख ! तू दिन - रात बुराईयाँ करता है । ठॅगीयां करता है । तू सदा वही काम करता रहता है जिनसे कुछ भी हाथ नहीं आता । देख जो किसान उन तूहों को गाहते रहते हैं । जिनमें दाने नहीं होते वे दौड़ - दौड़ के दुख ही पाते हैं ।

मिथिआ संग कूड़ि लपटाइओ उरझि परिओ कुसमाही । धरम राइ जब पकरसि बवरे तउ काल मुखा उठि जाही ।3।

अर्थः- हे कमले ! तू नाशवंत माया के संग नाशवंत जगत के साथ चिपका रहता है । तू कुसंभ के फूलों के साथ ही प्यार डाले बैठा है । जब तुझे धर्मराज आ के पकड़ेगा जब मौत आ गई तब बुरे कामों की कालिख़ ही मुँह पर लगवा के यहाँ से चला जाएगा ।

सो मिलिआ जो प्रभू मिलाइआ जिस मसतकि लेख लिखाँही । कहु नानक तिन्ह जन बलिहारी जो अलिप रहे मन माँही ।4।2।16। (5-1207)

अर्थः- पर हे भाई ! जीवों के भी क्या वश वह मनुष्य ही परमात्मा को मिलता है जिस मनुष्य को परमात्मा स्वयं मिलाता है । जिस मनुष्य के माथे पर प्रभू - मिलाप के लेख लिखे होते हैं । हे नानक ! कह मैं उन मनुष्यों से कुर्बान जाता हूँ । जो प्रभू - मिलाप की बरकत से मन में माया से निर्लिप रहते हैं ।

• जिस नाम रिदै सोई वड राजा । जिस नाम रिदै तिस पूरे काजा । जिस नाम रिदै तिनि कोटि धन पाए । नाम बिना जनम बिरथा जाए ।1।

अर्थः- हे भाई ! जिस मनुष्य के हृदय में परमात्मा का नाम बसता है वही सब राजाओं से बड़ा राजा है । उस मनुष्य के सारे काम सफल हो जाते हैं । उसने मानो करोड़ों किस्मों के धन प्राप्त कर लिए । हे भाई ! परमात्मा के नाम के बिना मनुष्य का जीवन व्यर्थ चला जाता है ।

तिस सालाही जिस हरि धन रासि । सो वडभागी जिस गुर मसतकि हाथ ।1। रहाउ।

अर्थः- हे भाई ! मैं उस मनुष्य की सराहना करता हूँ जिसके पास परमात्मा का नाम - धन सरमाया है । जिस मनुष्य के माथे पर गुरू का हाथ टिका हुआ हो वह बहुत भाग्यशाली है ।

जिस नाम रिदै तिस कोट कई सैना । जिस नाम रिदै तिस सहज सुखैना । जिस नाम रिदै सो सीतल हूआ । नाम बिना धिग जीवण मूआ ।2।

अर्थः- हे भाई ! जिस मनुष्य के हृदय में परमात्मा का नाम बसता है । वह मानो कई किलों और फौजों का मालिक हो जाता है । उसको आत्मिक अडोलता के सारे सुख मिल जाते हैं । उसका हृदय पूर्ण तौर पर शांत रहता है । हे भाई ! परमात्मा के नाम के बिना मनुष्य आत्मिक मौत सहेड़ लेता है उसका जीवन धिक्कारयोग्य हो जाता है ।

जिस नाम रिदै सो जीवन मुकता । जिस नाम रिदै तिस सभ ही जुगता । जिस नाम रिदै तिनि नउ निधि पाई । नाम बिना भ्रमि आवै जाई ।3।

अर्थः- हे भाई ! जिस मनुष्य के हृदय में परमात्मा का नाम आ बसता है । वह दुनियावी किरत - कार करता हुआ भी माया के प्रभाव से परे रहता है । उसको सुचॅजे जीवन की सारी जाच आ जाती है । हे भाई ! परमात्मा के नाम के बिना मनुष्य माया की भटकना में पड़ कर जनम - मरण के चक्करों में पड़ जाता है ।

जिस नाम रिदै सो वेपरवाहा । जिस नाम रिदै तिस सद ही लाहा । जिस नाम रिदै तिस वड परवारा । नाम बिना मनमुख गावारा ।4।

अर्थः- हे भाई ! जिस मनुष्य के हृदय में परमात्मा का नाम आ बसता है । वह बेमुथाज टिका रहता है । किसी की खुशामद नहीं करता उसको ऊँचे आत्मिक जीवन की कमाई सदा ही प्राप्त रहती है । उस मनुष्य का बड़ा परिवार बन जाता है भाव सारा ही जगत उसको अपना दिखाई देता है । हे भाई ! परमात्मा के नाम के बिना मनुष्य अपने मन का मुरीद बन जाता है । जीवन की सही जुगति से मूर्ख ही रह जाता है ।

जिस नाम रिदै तिस निहचल आसन । जिस नाम रिदै तिस तखति निवासन । जिस नाम रिदै सो साचा साहु । नामहीण नाही पति वेसाहु ।5।

अर्थः- हे भाई ! जिस मनुष्य के हृदय में परमात्मा का नाम आ बसता है । उसका हृदय - तख्त माया के हमलों से अडोल हो जाता है । आत्मिक अडोलता के ऊँचे तख्त पर उसका सदा के लिए निवास हो जाता है । वह मनुष्य सदा कायम रहने वाले नाम - धन का शाह बन जाता है । हे भाई ! नाम से वचित मनुष्य की ना कहीं इज्जत होती है ना ही कहीं ऐतबार बनता है ।

जिस नाम रिदै सो सभ महि जाता । जिस नाम रिदै सो पुरख बिधाता । जिस नाम रिदै सो सभ ते ऊचा । नाम बिना भ्रम जोनी मूचा ।6।

अर्थः- हे भाई ! जिस मनुष्य के हृदय में परमात्मा का नाम आ बसता है । वह सब लोगों में शोभा कमाता है । वह मनुष्य सर्व - व्यापक सृजनहार का रूप हो जाता है । वह सबसे ऊँचे आत्मिक जीवन वाला बन जाता है । हे भाई ! परमात्मा के नाम के बिना मनुष्य अनेकों जूनियों में भटकता है ।

जिस नाम रिदै तिस प्रगट पहारा । जिस नाम रिदै तिस मिटिआ अंधारा । जिस नाम रिदै सो पुरख परवाण । नाम बिना फिर आवण जाण ।7।

अर्थः- हे भाई ! जिस मनुष्य के हृदय में परमात्मा का नाम आ बसता है । उसकी आत्मिक जीवन की घाड़त की मेहनत सब जगह प्रकट हो जाती है । उसके अंदर से माया के मोह का अंधकार मिट जाता है । वह मनुष्य परमात्मा की दरगाह में कबूल हो जाता है । हे भाई ! परमात्मा के नाम के बिना बार - बार जनम - मरण का चक्कर बना रहता है ।

तिन नाम पाइआ जिस भइओ क्रिपाल । साध संगत महि लखे गोपाल । आवण जाण रहे सुख पाइआ । कहु नानक ततै तत मिलाइआ ।8।1।4। (5-1155-1156)

अर्थः- हे भाई ! जिस मनुष्य पर परमात्मा दयावान हो गया । उसने हरी - नाम हासिल कर लिया । साध - संगत में टिक के उसने सृष्टि के पालनहार के दर्शन कर लिए । उसके जनम - मरण के चक्कर समाप्त हो गए । उसने आत्मिक आनंद प्राप्त कर लिया । हे नानक ! कह उस मनुष्य की जिंद परमात्मा के साथ ऐक - मेक हो गई ।

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि – "रागमई प्रकाशित सुगधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नंही हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"